तिलकः- स्वदेशी,बहिष्कार और राष्ट्रीय शिक्षा

लॉर्ड कर्जन का शासन काल भारत में उग्रवाद को विकसित करने के पूरे अवसर दिया था। एक तरफ अहंकारी कर्जन था। जिसे अपने विशाल साम्राज्य की रक्षा करने में गर्व महसूस हो रहा था दूसरी तरफ भारत का मुक्तिदूत तिलक था जिसे अपने देशभक्ति पर स्वाभिमान था देश को तिलक से अमित प्यार था। कर्जन उस धडधकते हुए ज्वालामुखी के मुख पर बैठा हुआ था। जिसका निर्माण उसने स्वयं किया था उसने सोती हुई जाति का अपमान करके उसे इस प्रकार से जगा दिया कि जैसे भूखे सिंह को कोई उसकी माद में ही प्रताड़ना दे रहा हो। लॉर्ड कर्जन ने एक तरफ विश्वविद्यालयों पर सरकारी प्रभुत्व जमाने के लिए विश्वविद्यालय एक्ट पास किया। कोलकाता नगर निगम की राजनीतिक चेतना को समाप्त करने के लिए उसने चुने हुए सदस्यों की संख्या घटा दी। लॉर्ड कर्जन भारतवर्ष में तानाशाह की भूमिका निर्वाह रहा था। साम्राज्य को अखंड साम्राज्य बनाने की उसकी प्रबल इच्छा थी और अपनी इस इच्छा को पूरा करने में वह कहीं पीछे नहीं रहा। भारत की पीड़ा को तिलक ने जिस प्रकार से अनुभव किया कर्जन शासन में भी उन्हें उसी तरह की प्रेरणा से उसे समाप्त करने के सभी प्रयास किए। केसरी पत्रिका में उन्होंने लिखा लॉर्ड कर्जन के शासनकाल में तानाशाही चरम सीमा पर थी। यह बात सही है कि वायसराय बहुत होशियार है परंतु उनकी सारी होशियारी भारत की जनता की मांग का दमन करने के काम में आ रही है। प्रतीत होता है कि विलायत की गोरी सरकार ने उन्हें मनमानी करने की पूरी छूट दे रही है।

लॉर्ड कर्जन का शासनकाल भारतवर्ष के लिए दुर्भाग्य से परिपूर्ण था। जब सन 1899-1900 में भारत के कई भागो मैं भीषण अकाल पड़ रहा था। तब यह उन्मादी वायसराय दिल्ली में शाही दरबार करके मुगल बादशाहों की शान को मात देने की कोशिश कर रहा था अपने शासन की चतुराई से चलाने के लिए उसने फूट डालो

और शासन करो की नीति का पालन किया। सन 1904 का जुलाई माह कर्ज़न के लिए भी दुर्भाग्यपूर्ण किया और देश के लिए भी कर्जन ने बंगाल के विभाजन की घोषणा की 16 अक्टूबर सन 1904 को यह विभाजन विधिवत रूप से लागू हुआ। विभाजन की घोषणा के साथ बंगाल के महान नेता सुरेंद्रनाथ बनर्जी ने इस विभाजन का पूरी तरह से विरोध किया। उन्होंने विरोध को इस रूप में प्रकट किया कि कहीं विदेशी वस्तु की होली जल रही थी बहिष्कार के अन्य कार्यक्रमों का निर्माण हो रहा था तब स्वदेशी के लिए प्रचार हो रहा था। तिलक ने बंगाल के इस आंदोलन में महाराष्ट्र की शक्ति को भी लगाने का प्रयास किया। वहां उन्होंने स्वदेशी के प्रचार और विदेशी बहिष्कार के लिए आंदोलन चलाया स्वदेशी आंदोलन के लिए उन्होंने गणपति उत्सव को विशाल आधार पर मनाया। तिलक ने स्वदेशी आंदोलन को आत्मविश्वास, आत्म सहायता और आत्मसम्मान का आंदोलन कहा था ।उन्होंने स्वदेशी के माध्यम से देश के विकास की कल्पना को सही रूप में आंका था उन्होंने 8 जनवरी सन 1907 के केसरी में लिखा था विदेशी वस्तु इस देश में नहीं आनी चाहिए केवल वही वस्तुएं जो यहां उत्पन्न की जाती है खरीदी और इस्तेमाल की जानी चाहिए। हमें केवल वही कपड़ा प्रयोग करना चाहिए जो यहां बनाया जाता है चाहे वह कितना ही मोटा क्यों ना हो।

तिलक ने बराबर में एक माचिस फैक्ट्री का भी प्रदर्शन किया कागज बनाने में भी रूचि ली उन्होंने सन उन्नीस सौ पांच और उन्नीस सौ आठ के बीच केसरी के माध्यम से शुद्ध स्वदेशी के बारे में नहीं लिखा बल्कि उन्होंने विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार को पूर्ण रूप से उचित ठहराया उन्होंने खुले रूप में प्रचार किया कि जिन वस्तुओं के बिना हम नहीं रह सकते और जो कि ब्रिटेन के अलावा अन्य देशों से मंगाई जा सकती है उन्हें हम उन्हीं देशों से मंगाए ताकि अंग्रेजों को समझ आ सके कि यहां आंदोलन जानबूझकर उन्हीं के विरुद्ध चलाया जा रहा है। इस काल में तिलक ने आर्थिक और राजनीतिक दोनों ही क्षेत्र में स्वदेशी का जोर शोर से

समर्थन किया वह स्वयं अपने हाथ से काते हुए सूत* से अपने घर में स्वदेशी करघे से बुने हुए वस्तुओं का उपयोग करते थे। वह उन्हीं मोटे वस्त्रों को पहन करअदालत तक जाने लगे और कहा जाता है कि साम्राज्ञी विक्टोरिया के दरबार में भी वह उन्हीं वस्तुओं में गए थे।

जहाँ तिलक एक तरफ आंदोलन को सौ फीसदी सफल बनाने में जुट गए वहां वह दूसरी तरफ राष्ट्रीय शिक्षा के प्रति निरंतर जोर देते रहे उदारवादी प्रचलित शिक्षा प्रणाली के प्रति अंग्रेजों के प्रति आभार व्यक्त करते थे। लेकिन तिलक इस प्रणाली से घोर असंतुष्ट थे। उनकी यह मान्यता थी कि पढ़ना लिखना सीख लेना ही शिक्षा नहीं है। शिक्षा वही है जो हमें जीविकोपार्जन के योग्य बनाए, देश का सच्चा नागरिक बनाए ,वह हमें हमारे पूर्वजों के ज्ञान और अनुभव दे। तिलक को इस बात में कष्ट अनुभव होता था कि प्रचलित प्रणाली में शिक्षा का मर्म निहित नहीं है ।अंग्रेज भारत की जीविका छीन रहा है शोषण की नीति पर चल रहा है हमारे बालको को इसका अभी तक ज्ञान नहीं है। भारतीय शिक्षण संस्थाओं में घटिया अवसर पैदा करने के लिए एक प्रवृत्ति चली आ रही है ।उद्योग और प्राविधिक शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं है। ईसाई पादरियों के बढ़ते हुए प्रभाव को रोकने के लिए वह धार्मिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करना चाहते थे। तिलक यह चाहते थे कि स्वतंत्रत देश के समान हमारी शिक्षा प्रणाली हो, वह राष्ट्रीय एकता के लिए मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा दिए जाने की आवश्यकता पर जोर देते थे। वह अंग्रेजी को गौण स्थान दिए जाने के समर्थन में थे। तिलक के अनुसार आज जो व्यक्ति अच्छी अंग्रेजी बोल लेता है वह शिक्षित माना जाता है किंतु भाषा का ज्ञान हो जाना ही सच्ची शिक्षा नहीं है। किसी विदेशी भाषा को सीखने की ऐसीबाध्यता भारत के अतिरिक्त किसी भी देश में नहीं है।मातृभाषा के माध्यम से जो शिक्षा सात आठ वर्ष में प्राप्त की जा सकती है। उसे अब इस 25 वर्ष लग जाते हैं अंग्रेजी तो हम सीखना ही है पर उसकी शिक्षा अनिवार्य कर कोई कारण नहीं है। तिलक पहले राष्ट्रीयता राष्ट्रीय नेता थे जिन्होंने राष्ट्र भाषा के महत्व को

समझा और देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का सुझाव दिया तिलक एक कार्यक्रम और विचारधारा में अंग्रेजी का कोई स्थान नहीं था, क्योंकि वह अंग्रेजी की जगह हिंदी को देते थे।